आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2510 • उदयपुर, सोमवार 08 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

गुरुग्राम (हरियाणा) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 23 अक्टूबर 2021 को नारायण सेवा संस्थान द्वारा गुरुग्राम (हरियाणा), सामुदायिक केन्द्र से. 14 इफको चौक, गुरुग्राम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्रा. लिमिटेड, द्वारा शिविर में 86 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 13, ट्राइसाईकिल 30, व्हीलचेयर 10, वैशाखी 05, 49 के लिये कैलीपर्स 10 तथा ऑपरेशन चयन 03 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुकान्त कुमार जी (मैनेजर मित्सुबशी इलेक्ट्रिक प्रा. लिमिटेड), अध्यक्षता श्री विजयप्रताप जी (मित्सुबशी इलेक्ट्रिक प्रा. लिमिटेड), विशिष्ट अतिथि श्री विनोद जी गुप्ता (समाजसेवी), श्रीमति कृष्णा जी अग्रवाल, श्रीमति रूमा जी विरल, श्रीमति शकुंतला जी, (समाज सेविका), श्री उतमचंद जी (टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्ढ़ा (शिविर प्रभारी), श्री भवरसिंह राठौड़ आश्रम प्रभारी गुरुग्राम, श्री जतन जी भाटी आश्रम प्रभारी दिल्ली, श्री मुकेश त्रिपाठी सहायक, श्री मुन्ना जी (विडियोग्राफर), श्री प्रकाश जी डामोर रजिस्ट्रेशन ने भी सेवायें दीं।

कोरोना काल में निर्धन बच्चों को शिक्षा

दिव्यांगता की विभिन्न श्रेणियों के क्षेत्र में सेवा करने के जुनून के साथ नारायण सेवा संस्थान ने वर्ष 2016 में गूंगे, बहरे और मानसिक विकृत बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय की स्थापना की। वर्तमान में आवासीय विद्यालय में 82 मूकबधिर, प्रज्ञाचक्षु और मानसिक विमंदित बच्चे अध्ययनरत हैं।

इन बच्चों का बेहतर जीवन और भविष्य निर्माण करने के लिए संस्थान कटिबद्ध है। इस विद्यालय को सुचारू संचालित करने के लिए 25 सेवाभावी साधक समर्पित भाव से लगे हैं। ये दिव्यांग बच्चे इस विद्यालय से शिक्षित तो हो ही रहे हैं, साथ ही विभिन्न खेलों में प्रशिक्षित भी हो रहे हैं। इन बच्चों की उत्तम परवरिश की दृष्टि से अति–आधुनिक आवास–निवास व्यवस्था के साथ स्वास्थ्यवर्द्धक आहार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इन बच्चों की मुस्कराहट देखकर संस्थान में आने वाले अतिथिजन आनन्दित हो जाते हैं। यह विद्यालय राजस्थान सरकार के विशेष योग्यजन निदेशालय के सहयोग से संचालित है। इन बच्चों की कोरोनाकाल में भी अच्छे–से देखभाल हुई। संस्थान साधको ने इनके प्रति अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया।

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक विकृति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीकृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

एक दिव्यांग के विचार

परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब है। पिताजी मजदूरी करके किसी तरह सात सदस्य के परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं। दो साल की उम्र में तेज बुखार हुआ और पालियो हो गया, जिससे पांव सिकुड़ गया। इस तरह मेरा चलना–फिरना बाधित हो गया और जीवन पशु की तरह हो गया।

ज्यों–ज्यों समझ आने लगी मैं अपनी विकलांगता के कष्ट से दुःखी रहने लगा। एक दो जगह दिखाया भी, परन्तु परिवार में कोई भी शिक्षित नहीं है, अतः इलाज की जानकारी या इलाज करवाने का विचार ही नहीं आया। गांव में ही देशी इलाज करने वाले एक–दो चिकित्सकों को दिखाया पर कोई उपचार नहीं हुआ।

गांव के निकट मेरे एक रिश्तेदार श्री राधेश्याम जी ने मुझे संस्थान के बारे में बताया जिन्हें भी पोलियो था और संस्थान में ऑपरेशन के बाद वे पूरी तरह ठीक हो गये। उनकी राय के अनुसार मैं यहां आया और जांच के बाद डॉ. सा. ने कहा कि ऑपरेशन के बाद मैं ठीक हो जाऊंगा और आराम से चल–फिर सकूंगा।

मैं यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। जीवन के प्रति नई उम्मीद जगी। पांव का ऑपरेशन हुआ। अब मैं कैलिपर्स की सहायता से सामान्य व्यक्ति की तरह चल–फिर सकता हूँ। संस्थान ने मुझ जैसे असहाय को नया जीवन दिया है। मैं संस्थान के सभी भाई–बहनों के प्रति बहुत आभारी हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी सेवा के बदले में भगवान उन्हें धन–वैभव और सुख–शान्ति दे।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

हमारे गाँव के पास में एक नगर है, छोटा नगर है उसमे एक माताजी के न बेटा न बेटी। और पति जी की मृत्यु हो गई। और सत्तर साल की उम्र में माताजी ने, पड़ोस के युवक को जो माता से भी अधिक मानता था। देखो आप ! न खून रो रिश्तो, माता–पिता रो रिश्तो फिर भी वो माता से अधिक मानता था। एक दिन माता ने कहा – बाबू, गिरनार री यात्रा करवा री घणी इच्छा है लाला। अरे माताजी पन्द्रह दिन बाद चलते हैं। टिकट करा लिये, सब कुछ करा लिये अब गिरनार मंदिर के नीचे माताजी ने देखा, सीढ़ियाँ बहुत ज्यादा है। माताजी तो वठेई बैठी ग्या– बेटा थने घणो धन्यवाद है रे। म्हारे गर्भऊ पैदा वेतो तो भी म्हारो बेटो अतरो उपकार नी करतो, जतरो तु किदो। अब मने अठा तक ले आया लेकिन म्हारी सीढ़ियाँ चढ़नी पर चढ़ने की हिम्मत नहीं है। अटऊ भगवान रे धोग दूं, म्हारे भाग में अतरो सुख था। पड़ोस के बेटे ने कहा– माता मेरा हाथ पकड़। जितने मेरे पुण्य है सब मैंने अर्पित किया। हाथ पकड़, चल माता चल। वो हजारों सीढ़ियाँ माता चढ़ गई। पुण्य घटा नहीं बढ़ गया। ये ही पुष्कर मुनिजी महाराज साहब ने कहा था। इसी तरह की बात देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने कही थी। और पी.जी. जैन साहब ने कहा– बाबूजी मैं जीवनभर आप के लिये काम करूंगा। व्यापार बेटो को सम्भला दिया। मुझे कोयम्बटुर ले गये, मुझे विशाखापट्नम ले गये, मुझे बैंगलौर ले गये, मुझे चेन्नई ले गये, मुझे मद्रास ले गये। मुझे रत्नागिरि ले गये। मुझे गोरेगांव जो रायगढ़ जिले में है वहाँ ले गये। बहुत जगह ले गये और उन्होंने सेवाधाम खड़ा करा दिया। और पोखरना साहब जिनका उपकार मैं नहीं भूल सकता।

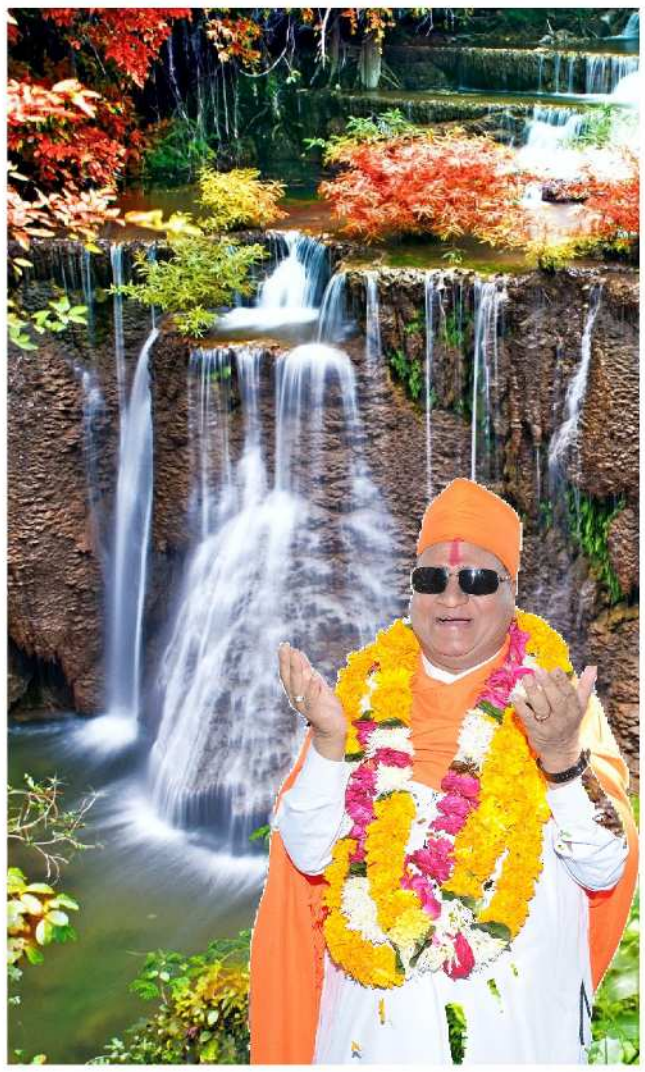

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल/ कम्प्युटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सोजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग – 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भुखें को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा– कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चो के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करे उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नही है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

व्यक्ति संवेदनाओं का पुंज है। संवेदना किसी भी मानव की सहज वृत्ति है। संवेदन शून्य व्यक्ति को मानव मानना संभव नहीं है। ये संवेदनाएं हैं क्या ? वस्तुतः मानव मन भावों की एक समवेत रचना है। ये भाव नकारात्मक भी हो सकते हैं और सकारात्मक भी। पर संवेदना का सहज जुड़ाव तो सकारात्मकता से ही है।

किसी भी मनुष्य या प्राणी पर कोई संकट आये और पीड़ा का अनुभव करके किसी अन्य व्यक्ति का हृदय द्रवित हो उठे, यही संवेदना है। संवेदनाओं का यद्यपि बहुत गहन तल होता है किन्तु सामान्य व्यवहार में संवेदना का अर्थ है – किसी की खुशी में खुश, किसी के पीड़ित होने पर दुःख तथा हरेक जीव को स्वसम मानते हुए उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना जो खुद को अच्छा लगे। यह संवेदना का एक रूप कहा जा सकता है।

संवेदनाएं स्वभावजन्य भी होती हैं और परिस्थितिजन्य भी। किन्तु श्रेष्ठ बात यह है कि वे स्वभाव बन जाएं।

कुछ काव्यमय

मानव की संवेदना
विस्तार पाकर
प्राणि मात्र को अभय
कर देती है।
सम्पूर्ण सृष्टि को
सद्भावों से भर देती है।
जब संवेदनाएं मर जाती हैं।
तो मानवता ठहर जाती है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

अद्भुत दानवीरता

एक बार अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा मैंने आज तक संसार में बड़े भ्राता युधिष्ठिर जी जैसा दानवीर नहीं देखा।' श्रीकृष्ण बोले, 'पार्थ यह तुम्हारा भ्रम है। इस दुनिया में कई दानवीर ऐसे हैं जो बिना सोचे–समझे कई मूल्यवान से मूल्यवान वस्तु का दान देने में नहीं हिचकते। अर्जुन ने आपत्ति की, भला कोई व्यक्ति स्वयं को नुकसान पहुंचा कर किसी को मूल्यवान से मूल्यवान वस्तु दान में क्यों देने लगा?' इस पर श्रीकृष्ण मुस्करा कर बोले, चिंता न करो पार्थ, तुम्हारा यह भ्रम कुछ समय बाद दूर हो जाएगा।

ऐसा एक व्यक्ति तो मेरी ही नजर में है, जो कीमती से कीमती वस्तु का दान देने में भी तनिक भी संकोच नहीं करता। समय आने पर तुम्हें स्वयं इससे बात का पता चल जाएगा। और

तुम अपनी धारणा बदल दोगे? कई दिन बीत गए और अर्जुन इस प्रसंग को भूल गए। बरसात का मौसम आ गया तब एक दिन श्रीकृष्ण और अर्जुन भिक्षुक का वेश बनाकर युधिष्ठिर के द्वार पर पहुंचे। युधिष्ठिर ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। वे भिक्षुक वेश में श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं पहचान पाए। कुछ देर बाद भिक्षुकों ने युधिष्ठिर से सूखे चंदन की लकड़ी मांगी। युधिष्ठिर ने उनकी मांग को पूरा करने का प्रयत्न किया किन्तु कहीं पर भी चंदन की सूखी लकड़ी नहीं मिली। इस पर युधिष्ठिर ने असमर्थता जताते हुए कहा, 'वर्षाकाल में चंदन की सूखी लकड़ी मिलना असंभव है।'

युधिष्ठिर से निराश होकर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों कर्ण के द्वार पहुंचे और वही मांग दोहराई। कर्ण ने उन दोनों का स्नेहपूर्वक स्वागत किया और बोले, हे विप्र देव!

आप बैठें मैं कोई न कोई व्यवस्था करता हूं। जब कर्ण को भी भरसक प्रयत्न करने पर चंदन की सूखी लकड़ी नहीं मिली तो उन्होंने बिना एक पल गवांए अपने महल के कीमती चंदन के दरवाजे उतार कर दे दिए। अर्जुन कर्ण की दानवीरता देख कर दंग रह गए।

–कैलाश 'मानव'

अंधा घोड़ा

सही स्थान पर बोया गया
सुकर्म का बीज ही,
महान फल देता है।

शहर के नजदीक एक फार्म हाउस में दो घोड़े रहते थे। दूर से वे दोनों बिल्कुल एक जैसे दिखते थे, पर पास जाने पर पता चलता था कि उनमें से एक घोड़ा अंधा है, पर अंधा होने के बावजूद फार्म के मालिक ने उसे वहाँ से निकाला नहीं था, बल्कि उसे और भी अधिक सुरक्षा और आराम के साथ रखा था। अगर कोई थोड़ा और ध्यान देता तो उसे ये भी पता चलता कि मालिक ने दूसरे घोड़े के गले में एक घंटी बाँध रखी थी जिसकी आवाज सुनकर अंधा घोड़ा उसके पास पहुँच जाता और उसके पीछे–पीछे बाड़े में

घूमता। घंटी वाला घोड़ा भी अपने अंधे मित्र की परेशानी समझता, वह बीच–बीच में पीछे मुड़कर देखता और इस बात को सुनिश्चित करता कि कहीं वह रास्ते से भटक ना जाए। वह ये भी सुनिश्चित करता कि उसका मित्र सुरक्षित वापस अपने स्थान पर पहुँच जाए और उसके बाद ही वह अपनी जगह की ओर बढ़ता। दोस्तों, बाड़े के मालिक की तरह ही भगवान हमें बस इसलिए नहीं छोड़ देते कि हमारे अन्दर कोई दोष या कमियाँ हैं। वे हमारा ख्याल रखते हैं और हमें जब भी जरूरत होती है तो किसी ना किसी को हमारी मदद के लिए भेज देते हैं। कभी–कभी हम वो अंधे घोड़े होते हैं, जो भगवान द्वारा बाँधी गई घंटी की मदद से अपनी परेशानियों से पार पाते हैं, तो कभी हम अपने गले में बंधी घंटी द्वारा दूसरों को रास्ता दिखाने के काम आते हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश का यह दृढ़ मत था कि दुनिया में अच्छे लोगों की बहुतायत है, इसकी पुष्टि समय समय पर होती रही। नारायण सेवा संस्थान जिस तरह से धीरे धीरे आकार ग्रहण कर रहा था, इसका ज्वलंत उदाहरण था। कैलाश उदयपुर का भी ऋणी था, उदयपुर की वजह से ही वह इतना सब कर पाया और भविष्य में अभी और क्या अर्जित करना है, उसे भान तक नहीं था। उसने स्वयं को मानव जीवन की सेवा में संलिप्त कर लिया था। उसे अपने अग्रवाल कुल में जन्म लेने का गर्व था मगर वह नहीं चाहता था कि उसकी पहचान वर्ग विशेष तक ही सीमित हो, इसी कारण एक दिन उसने अपने नाम के आगे 'मानव' उपनाम जोड़ दिया।

यह सब अत्यंत सरलता से चल रहा था तभी मानों उस पर कहर टूट पड़ा। उसका उदयपुर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना जैसे किसी को नहीं सुहाया हो, उसके ट्रांसफर ऑर्डर आ गये और उसे बांसवाड़ा जाने को कहा गया।

उदयपुर में संस्था काम काज काफी फैल गया था, कई प्रकल्प शुरू कर दिये थे जो अभी अधूरी अवस्था में थे, निर्माण कार्य जारी था, बच्चे भी बड़े हो गये थे, एक ही विकल्प था कि किसी तरह यह स्थानान्तरण रूकवाया जाये।

अंश - 153

आपकी संस्थान द्वारा नर सेवा : नारायण सेवा

गोविन्दपुरा गाँव, जिला भिवानी हरियाणा से आये श्री सुरेश कुमार पिता श्री राम किशन, उम्र 25 वर्ष जन्म से ही पोलियो रूपी अभिशाप झेल रहे हैं। श्री सुरेश कुमार ने कक्षा चार तक अध्ययन किया है। पिता श्री राम किशन मध्यम आय वर्गीय कृषक है, जो बताते हैं कि सेवा सौभाग्य के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान रूपी सेवा मंदिर की जानकारी मिली। आशा की किरण लिये संस्थान में आये और संस्थान के चिकित्सकों द्वारा जांच कर ऑपरेशन किया गया। वे बताते हैं कि मेरा यहाँ कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। यह संस्थान पोलियो रूपी दानव को मारकर पुण्य का कार्य कर रही है।

राजकोट, गुजरात निवासी श्री प्रतीक सोनी पिता श्री सतीश सोनी, उम्र 15 साल जो जन्म से ही मानसिक पक्षाघात के शिकार है। श्री प्रतीक सोनी ने कक्षा सात तक अध्ययन किया है। श्री सतीश सोनी का अपना सोने का व्यवसाय है वे बताते है कि– बम्बई, हैदराबाद जैसे कई महानगरों के चिकित्सालयों में इलाज कराया, परन्तु कोई सफलता नहीं मिल सकी। टी.वी. पर संस्थान की सेवाओं के बारे में जानकर उदयपुर आये और उसी दिन ऑपरेशन कर दिया गया। यहाँ के सेवा कार्य देखकर हर रोगी को परमानन्द मिल जाता है। संस्थान में सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएंगी ये स्वादिष्ट - चटनियां

इस मौसम में इम्युनिटी कमजोर होने से शरीर में दर्द, अकड़ने, आलस और विभिन्न तरह के संक्रमण की आशंका बढ़ जाती है। दवाओं के अलावा यदि घर पर ही कई तरह की चटनी बनाकर इस्तेमाल में लेते हैं तो फायदा होता है। जानें इनके बारे में

आंवला चटनी : विटामिन सी युक्त आंवला सर्दी के मौसम में अधिक उपयोगी है। इम्युनिटी बढ़ाने के अलावा रक्त को साफ करने और लिवर की कार्यप्रणाली को सही रखता है। चटनी बनाने के लिए कुछ आंवलों के साथ कच्ची हल्दी और अदरक को पीस सकते हैं। इस चटनी को खाने से रक्त का शुद्धिकरण भी होता है।

चुकंदर चटनी : सर्दी में बहुतायत में मिलने वाला चुकंदर खून की पूर्ति करने के साथ ही जोड़ों को मजबूत रखता है। इसमें मौजूद विशेष तत्व रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक है। चटनी बनाने के लिए चुकंदर को घिसकर इसमें धनिया व अदरक भी मिला सकते हैं।

काले तिल की चटनी : इसमें प्रचुर मात्रा में कैल्शियम और जिंक होता है जो हड्डियों को तंदुरुस्त रखने में सहायक है। चटनी बनाने के लिए काले तिल को भूनकर इन्हें मसालों के साथ पीस लें।

हरे लहसुन की चटनी : माना जाता है कि लहसुन हड्डियों के क्षरण को कम करता है जिससे महिलाओं में ऑस्टियोपोरोसिस की आशंका घटती है। हरे लहसुन को पीस कर बनी चटनी जोड़ों से जुड़ी बीमारियों को दूर करती हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास सब बड़ी लोकप्रिय विधायें थीं। इधर मेरा प्री–युनिवरसिटी का रिजल्ट भी आ गया। तब परीक्षा परिणाम अखबारों में छपता था। जो उत्तीर्ण होता उसके रोल नम्बर छप जाते थे। कितने अंक मिले यह पता नहीं चल पाता था। आज की तरह इंटरनेट का युग तो था नहीं। मेरे भी रोल नम्बर अखबार में आये तो खुशी होना स्वाभाविक ही था। पाँच–छह दिन बाद एक लिफाफा आया उसमें अंकतालिका थी। देखा तो अत्यंत प्रसन्नता हो उठी। मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण था तथा फिजीक्स, केमेस्ट्री व मेथ्स में डिंसटेक्शन आया था। मैंने परमात्मा के प्रति अहोभाव जताया कि उन्होंने ऐसी बुद्धि दी कि मैं उनकी कृपा से अच्छे अंक ला पाया। तब मुझे विवेक या शरीर के चक्रों का तो ज्ञान नहीं था पर यह जरूर मानता था कि यह सब परमात्मा ने ही मुझसे करवाया है। आज भी मेरी हर कार्य के प्रति यही धारणा है कि जो भी कार्य मेरे इस शरीर, मन, बुद्धि से हो पा रहा है, वह परमात्मा ही करवा रहा है, वरना मेरी क्या बिसात है ? परमात्मा को साकार भजो या निराकार यह महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण है उसकी अनुकम्पा को अनुभव करना। गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरित मानस में लिखा है–

बिनु पग चलहिं, सुनहिं बिनु काना।
कर बिनु करम करहिं विधि नाना।।
आसन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

वह निराकार ब्रह्म अपने देह देवालय में प्रतिष्ठित है। छोड़ दीजिये यह जानना कि आत्मा कहाँ है? यह नाभि में है? हृदय में है या मस्तिष्क में है? मेरा ऐसा सोचना है कि आत्मा तो देह के रोम–रोम में है। आत्मा हजारों, करोड़ों, खरबों कोशिकाओं में है। ऐसा मेरा व्यक्तिगत सोच है, मैंने कहीं इसे पढ़ा नहीं है पर मैं मानता हूँ कि आत्मा, ईश्व र, ब्रह्माण्ड, कायनात, सूर्य–चन्द्र का प्रकाश, पृथ्वी की सहनशीलता, वायु की चपलता, अग्नि की तेजस्विता ये सब रोम रोम में समाविष्ट हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 279 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023